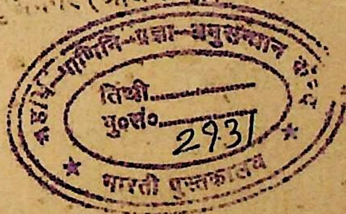
॥ ओ३म् ॥

के वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत

न्माष्टमी पर सादर-सप्रेम

ान् श्रीकृष्ण



लेखक :

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, एम० ए०

आर्य-समाज कलकत्ता

१६, विधान सरणी, कलकत्ता-६

श्रीकृष्ण चरित्र पर
महर्षि स्वामी दयानन्दजी का मत :

"श्रीकृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उसका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। **जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्णजी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा,** और इस भागवतवाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, पर-स्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्णजी में लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मतवाले श्रीकृष्णजी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्णजी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती ?"

—सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास



भगवान् श्रीकृष्ण

आज से पाँच सहस्र वर्षों से भी पूर्व की बात है। द्वापर का अन्त हो रहा था। उस समय भारत वसुन्धरा पर विपत्ति की काली घटाएँ घिर आयी थीं। देश खण्ड-खण्ड होकर विग्रह-रत था। प्राग्ज्योतिषपुर (असम) में नरकासुर के अत्याचारों से प्रजा विह्वल थी, मध्य भारत में कंस और जरासंध के अत्याचारों की सीमा न रह गई थी। हस्तिनापुर (दिल्ली) में कौरव-पांडव-संघर्ष हो रहा था, उसमें भी अत्याचारी कौरव सफल मनोरथ हो रहे थे। यत्किञ्चित् आशा पांडवों से की जा सकती थी, किन्तु वे कौरवों से प्रताड़ित हो चुके थे। यह घनघोर अन्धकार का समय था। धर्म की ग्लानि हो रही थी, गो-ब्राह्मण का नाश किया जा रहा था। चतुर्दिक् नैराश्य की घनघोर घटाएँ घिर आई थीं। कहीं से भी प्रकाशकिरण का आभास भी नहीं हो रहा था। इसी समय धर्म के अभ्युत्थान के लिये, गो-ब्राह्मण की

रक्षा के लिये, खण्ड-खण्ड विभक्त भारत को महाभारत बनाने के लिये, अधर्मान्धकार को दूर करने के लिये हुआ—

श्रीकृष्ण चन्द्रोदय

भाद्रपद की कृष्णा अष्टमी को अर्धरात्र में माता देवकी की कोख से आनन्द कन्द देवकीनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। किशोर श्रीकृष्ण ने अत्याचारी कंस का निपात किया और धार्मिक राजा उग्रसेन को राजगद्दी सौंप कर आप विद्याध्ययन करने के लिये आचार्य सन्दीपनि की कुटी में जा विराजे। "वेदवेदाङ्ग तत्त्वज्ञः सर्वशास्त्र विशारदः" बनकर ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्त किया और रुक्मिणी से विवाह करके बारह वर्षों को ब्रह्मचर्य साधना के पश्चात् प्रद्युम्न जैसा पुत्र उत्पन्न किया। जीवन के कर्मक्षेत्र में प्रविष्ट होकर भगवान् श्रीकृष्ण ने जैसा अर्जुन के रूप में सारे देश को ललकार कर कहा—

उत्तिष्ठ परन्तप !

सारे देश ने अँगड़ाई ली। भगवान श्रीकृष्ण की शङ्खध्वनि के नीचे धार्मिक, सत्यनिष्ठ आर्यजन एकत्र हुए। कंस का संहार तो आगे ही हो चुका था। भगवान् श्रीकृष्ण ने जरासन्ध आदि अन्य अत्याचारी अनार्य राजाओं को मार कर देश की एकता

के बाधक सारे कांटों को हटा दिया। केवल रह गया दुर्योधन। इसको हटाने के लिये भगवान् ने महाभारत युद्ध का सञ्चालन किया। स्वयं पाण्डव सेनापति अर्जुन के सारथी बनकर नेतृत्व करते रहे। अन्ततः धर्म की जीत हुई, धर्म का अभ्युत्थान हुआ, अधर्म का नाश हुआ। महाभारत की स्थापना हुई। भगवान् श्रीकृष्ण के नेतृत्व में खण्ड-खण्ड विभक्त भारत पुनः एक बार महाभारत बन गया। देश में पुनः एक बार सुख का साम्राज्य आया और चारों दिशाओं में गूँज उठा।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

भारत की जनता आज भी श्रद्धा-समन्वित एवं भक्ति-भीनी भावनाओं के साथ भगवान् कृष्ण के आदर्श का स्मरण करती है। आज भी भारतमें सर्वत्र श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाई जाती है।

इस अवसर पर चक्र सुदर्शनधारी, कंस विध्वंसक, महाभारत के नेता, गीता गायक भगवान् का स्मरण करना चाहिए। उनके आदर्श को अपनाना चाहिए, महाभारत की कथा होनी चाहिये, गीता का उपदेश होना चाहिए। किन्तु यह सब बहुत कम होता है। अधिकांश घरों में इस ऐतिहासिक महापुरुष के प्रति होता है—

अन्याय

इनके जन्मोत्सव पर रासलीला, चीरहरण, राधाकृष्ण की अत्यन्त कल्पित अवाञ्छनीय परम्पराओं का स्मरण करके हम भगवान् को "चौरजार शिखामणिः" की उपाधि देकर स्मरण करते हैं। यह घोर अन्याय है—भगवान् श्री कृष्ण के प्रति, भारतीय संस्कृति के प्रति। महाभारत में रासलीला, चीरहरण कुछ नहीं है, राधा का नाम तक नहीं है। यह परवर्ती पौराणिक काल की अत्यन्त अनिष्टकारिणी कल्पना है। यह श्री कृष्ण चरित्र पर कलङ्क है। भक्ति भावना के भोलेपन में न पड़कर हमें अपने महापुरुषों के चरित्र की रक्षा करनी चाहिए; उसीका प्रचार करना चाहिए।

उद्धार

इस प्रसङ्ग में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी की उक्ति कितनी मार्मिक है—

"श्री कृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उसका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्णजी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा और इस भागवतवाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल,

क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्णजी में लगाये हैं। इसको पढ़ पढ़ा सुन सुना के अन्य मतवाले श्री कृष्णजी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्णजी के सदृश महात्माओं को झूठी निन्दा क्यों कर होती ?"

—सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास

जब से महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने कृष्ण चरित्र पर से इस असत्य, काल्पनिक, अनिष्टकारी लांछन को हटाया है तब से कई सनातनधर्मी उदार विद्वानों ने भी स्वामी दयानन्दजी के विचारों का समर्थन किया है।

हिन्दी साहित्य के यशस्वी साहित्यकार श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने 'संस्कृति के चार अध्याय' में इस प्रङ्ग पर पहुँचे हैं—

"अवश्य ही, गोपाल लीला, रास और चीरहरण की कथाएँ तथा उनका रसिक-रूप बाद के भ्रान्त कवियों और आचारच्युत भक्तों की कल्पनाएँ हैं, जिन्हें इन लोगों ने कृष्ण-चरित्र में जबर्दस्ती ठूँस दिया। 'शकों के ह्रास-काल में, जिस प्रकार महादेव का रूपान्तर लिंग में हुआ, उसी प्रकार गुप्तों के अवनति काल में वासुदेव का रूपान्तर व्यभिचारी गोपाल में हुआ। (कोसम्बी)।"

—संस्कृत के चार अध्याय पृष्ठ ७८-७९

कोई भी पक्षपात हीन, उदार विचारशील व्यक्ति श्री दिनकरजी के निष्कर्ष से मतभेद नहीं कर सकेगा। हमें श्रीकृष्ण की इस तरह की कल्पित पाप-प्रसू लीला से अपनी जाति को बचाना चाहिये। इस प्रकार के आयोजनों का समर्थन नहीं करना चाहिये।

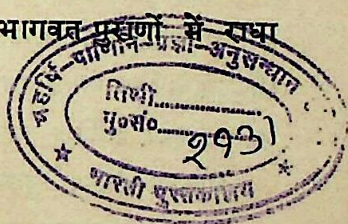
श्री पं० हजारी प्रसादजी द्विवेदी वर्त्तमान काल के गण्यमान विद्वान् हैं। उन्होंने 'मध्यकालीन धर्म-साधना' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है कि "श्रीकृष्णावतार के दो मुख्य रूप हैं। एक में वे यदुकुल के श्रेष्ठ रत्न हैं, वीर हैं, राजा हैं, कंसारि हैं। दूसरे में वे गोपाल हैं, गोपी-जन वल्लभ हैं, 'राधाधर-सुधापान-शालि-वनमालि' हैं। प्रथम रूप का पता बहुत पुराने ग्रन्थों से चल जाता है। पर, दूसरा रूप अपेक्षाकृत नवीन है। धीरे-धीरे वह दूसरा रूप ही प्रधान हो गया और पहला रूप गौण।"

श्री हजारी प्रसाद द्विवेदीजी ने शिल्प-कला के अध्ययन के आधार पर भी यही निश्चय किया है कि प्राचीन काल में श्रीकृष्ण की वीर चर्चा ही प्रधान थी।

श्रीराधाकृष्ण : अनुचित प्रयोग

श्रीकृष्णजी की पत्नी का नाम रुक्मिणी था, फिर राधा कौन थी? कृष्ण की पत्नी तो थी ही नहीं। एक जगह ब्रह्मवैवर्त पुराण

में आता है कि राधा उनकी मामी थी ! तो भी तो सीताराम की तरह राधाकृष्ण कहकर राधा का प्रयोग पत्नी के स्थान पर अनुचित है। राधा का तो नाम महाभारत में है ही नहीं, उसमें कोई गोपी लीला भी नहीं है। पर जिन पुराणों में गोपी लीला है, उनमें भी हरिवंश, विष्णु पुराण और भागवत पुराणों में राधा का नाम भी नहीं आता।



राधाकृष्ण की मूर्त्ति की नवीनता

"भागवत सम्प्रदाय और माध्व सम्प्रदाय राधा को नहीं मानते हैं। असम में भी वैष्णवों के बीच राधा की पूजा का चलन नहीं है। पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'मध्यकालीन-धर्म-साधना' में यह भी लिखा है कि 'प्रेम-विलास' और 'भक्ति-रत्नाकर' के अनुसार 'नित्यानन्द प्रभु की छोटी पत्नी जाह्नवी देवी जब बृन्दावन गईं, तो उन्हें यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि श्रीकृष्ण के साथ राधा नाम की मूर्ति की कहीं पूजा नहीं होती थी। घर लौट कर उन्होंने नयनभास्कर नामक कलाकार से राधा की मूर्त्तियाँ बनवायीं और उन्हें वृन्दावन भिजवाया। जीव गोस्वामी की आज्ञा से ये मूर्त्तियाँ श्री कृष्ण के पार्श्व में रखी गईं और तब से श्रीकृष्ण के साथ राधिका की भी पूजा होने लगी।"

—संस्कृति के चार अध्याय पृष्ठ ८०

इस प्रकार आज के उदारचेता विद्वान इस बात से सहमत हैं कि राधा की कल्पना और राधाकृष्ण की मूर्ति की कल्पना सभी नवीन है।

आज जन्माष्टमी के दिन चक्रसुदर्शनधारी श्रीकृष्ण का चित्र लगाना चाहिए, महाभारत युद्ध का सञ्चालन करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण के चित्र का प्रचार करना चाहिए। माता रुक्मिणी के साथ श्रीकृष्ण के चित्र बनाने चाहियें।

श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष के चरित्र से कलङ्क हटाना प्रत्येक भारतीय का पुनीत कर्त्तव्य है।



श्रीकृष्ण ध्वनि

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

॥ भ० गीता २-४७ ॥

भावार्थ :—कर्म करने में तुम्हारा अधिकार है, फल प्राप्ति में नहीं। तुम्हारी रुचि अकर्मण्यता में न हो, तुम कर्मफल के हेतु मत बनो।

❀

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥

॥ भ० गीता ३-६ ॥

भावार्थ :—जो कर्मेन्द्रियों का संयम तो करता है, पर भीतर ही भीतर भोगों का चिन्तन करता है, उस विमूढ़ को मिथ्याचारी कहते हैं।

❀

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीर यात्राऽपि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥

॥ भ० गीता ३-८ ॥

भावार्थ :—अकर्मण्य रहने की अपेक्षा कर्म करना अधिक अच्छा है, अतः तुम सदा कर्म करो। तुम्हारे शरीर का निर्वाह भी बिना कर्म किये नहीं होगा।

प्रकाशक :

कृष्णलाल खट्टर

मन्त्री

आर्यसमाज कलकत्ता

१९, *विधान सरणी,*

कलकत्ता-६.

तृतीय संस्करण

मूल्य : दस पैसे

मुद्रक :

रत्नाकर प्रेस

११/ए, सैयदसाली लेन,

कलकत्ता-७.